



उत्तराखण्ड राज्य के जौनसार क्षेत्र का भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिचय

रीता शर्मा, डॉ. शुभा मटियानी

हिंदी विभाग, डी० एस० बी० परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.4.12253>

सारांश

इस शोध पत्र में जौनसार के भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिचय का वर्णन किया गया है। जौनसार उत्तराखण्ड राज्य का वह क्षेत्र है। जहाँ जौनसारी जनजाति निवास करती है। जौनसारी राज्य का दूसरा सबसे बड़ा समुदाय होने के साथ-साथ गढ़वाल क्षेत्र का भी सबसे बड़ा समुदाय है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत देहरादून का चकराता, कालसी, त्यूनी, लाखामण्डल आदि क्षेत्र टिहरी का जौनपुर क्षेत्र, उत्तरकाशी का रवाई क्षेत्र आता है। देहरादून के कालसी, चकराता, त्यूनी तहसील को जौनसार-बावर क्षेत्र कहा जाता है। 1002 वर्ग किमी मीटर क्षेत्र में फैले इस क्षेत्र के अन्तर्गत 39 खत व 358 राजस्व गाँव आते हैं इसके पूर्व में यमुना नदी और पश्चिम में टोंस नदी प्रवाहित होती है। जौनसार-बावर के दो प्रमुख क्षेत्र हैं— नीचे का आधा भाग जौनसार तथा ऊपरी हिमाच्छादित भाग बावर कहलाता है।

मूल शब्द: जौनसार-बावर, जौनसारी जनजाति, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, क्षेत्रीय भाषा

बालकृष्ण भट्ट ने कहा है साहित्य समाज का दर्पण है साहित्य दो प्रकार का होता है लोकसाहित्य और परिनिष्ठित साहित्य। साहित्य समाज का पथप्रदर्शक होता है। प्राचीन काल से ही लोक में प्रचलित साहित्य की वे विभिन्न विधाएँ जो मौखिक तौर पर पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती हैं। उन्हें लोकसाहित्य कहा जाता है। जौनसार-बावर क्षेत्र में भी ऐसी कई विधाएँ लोगों के बीच मौखिक परम्परा में विद्यमान हैं। जौनसार क्षेत्र में प्रचलित भाषा जौनसारी कहलाती है। जौनसार-बावर अपनी संस्कृति, भाषा बोली, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन व वेशभूषा आदि की दृष्टि से अनूठा है, जो इसे अन्य समाज से अलग करता है। अतिथि देवो भवः की परम्परा इस समुदाय की समृद्ध संस्कृति का परिचायक रही है। इस संस्कृति के अन्तर्गत हारूल, रासा, धुमसू, झेता, तादी, नारी-पाण्डव नृत्य आदि आते हैं। जौनसारी जनजाति के मुख्य त्यौहार विस्सू (वैशाखी), जागड़ा, दशहरा, दियाई (दीपावली), नुणार्ई, मरोज (माघमेला) आदि हैं। जौनसार-बावर क्षेत्र में मिलने वाली लोकसाहित्य की प्रमुख विधाएँ हैं — लोकगीत, लोकथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकनाट्य, अनाउणे, भुजाउणियों। इस क्षेत्र में प्रचलित लोकसाहित्य को अद्यतन पूर्ण रूपेण संकलित नहीं किया जा सका है। भूमंडलीकरण के दौर में एक ओर अंग्रेजी भाषा हिन्दी भाषा पर दबदबा बना रही है, दूसरी ओर क्षेत्रीय भाषाओं का हिन्दीकरण हो रहा है या वे धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खो रही हैं।

महाभारत काल से जुड़ा जौनसार बावर क्षेत्र एक आदिवासी जनजातीय क्षेत्र है। अपनी मौलिक अर्वाचीन संस्कृति के लिए यह विश्व में प्रसिद्ध है। नगाधिराज हिमालय की उपत्यकाओं में रचा बसा यह विशाल भू-भाग प्रशासनिक दृष्टि से यद्यपि नवगठित उत्तरांचल राज्य के गढ़वाल मंडलान्तर्गत जनपद देहरादून की उत्तरी सीमा तहसील चकराता में स्थित है, किन्तु अपने भौगोलिक विस्तार और अलग सांस्कृतिक पहचान के कारण नवगठित राज्य में इसका पृथक सार्वभौम अस्तित्व है। उत्तरांचल राज्य के मुख्यतः तीन भाग हैं गढ़वाल, कुमाँऊ और जौनसार बावर। तीनों क्षेत्रों की पृथक बोलियाँ (भाषाएँ) हैं गढ़वाली, कुमाँऊनी और जौनसारी। कुमाँऊ और गढ़वाल तो पुराने समय से ही शिक्षा और आर्थिक विकास की दौड़ में आगे निकल गये किन्तु जौनसार बावर आज भी पिछड़ा हुआ है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कुमाँऊ और गढ़वाल ने आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संवेतना में

आशातीत प्रगति की। ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी शिक्षा, लोकसाहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में उच्च कीर्तिमान स्थापित किए।

दुर्भाग्य कहें या दैवयोग कि इन्हीं दो क्षेत्रों से जुड़ा जौनसार बावर पिछड़ा रह गया। इसे अपनी आदिम अवस्था से उबार कर राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने के लिए सरकार को सन् 1967 में अनुसूचित जनजातीय क्षेत्र घोषित करना पड़ा जिससे विकास कार्यों को इस क्षेत्र में प्राथमिकता से लागू किया जाय और यहां के शिक्षितों को रोजगार व सरकारी सेवा के अवसर प्राप्त हो सकें।

अब यहाँ प्रगति के नवोन्नयन के लिए जन जागृति की उर्वरा धरा तैयार हो रही है। परन्तु साहित्य, कला और संस्कृति के पुनरुद्धार के बिना कोई देश, जाति, धर्म अथवा समाज प्रगति नहीं कर सकता। साहित्य कला और संस्कृति को यहाँ विकास के कार्यक्रमों में प्राथमिकता नहीं दी गई। सरकारी अथवा गैरसरकारी स्तर पर प्रोत्साहन न मिलने के कारण विश्व की यह उन्नत संस्कृति अपने मौलिक स्वरूप की रक्षा और परिरक्षण के लिए असहाय होकर अपनी पहचान को बचाए रखने के खतरों से जूझ रही है। यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि संस्कृति ही समाज का संस्कार बनाती है, सुपात्र और सुयोग्य नागरिकों का निर्माण करती है। जौनसार बावर के भौगोलिक विस्तार में लोक-साहित्य की प्रचुर सामग्री भरी पड़ी है। यहाँ के लोकगीत विश्व के लोकगीतों में श्रेष्ठ हैं। लोक संस्कृति विश्व की लोकसंस्कृतियों में विरल, अनूठी व अद्वितीय है। किन्तु यह लिखित रूप में नहीं है। ब्रिटिश संविधान की तरह जनमानस में अलिखित रूप से विद्यमान यह लोक संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी सदियों से परम्परागत ढंग से अनुश्रवण तथा गायन शैली द्वारा अपनी जीवंतता मंगा अक्षुण्ण बनाए रखने को विवश है।

जौनसार बावर की पौराणिक, धार्मिक तथा पारम्परिक सामाजिक मान्यताओं के कलेवर में समाहित इतिहास के वह विस्मृत आख्यान जिनमें जगत ग्राम के ताम्रपत्रों के अभिलेख, महाभारत से जुड़ा प्रसिद्ध गांव लाखामंडल, लाखामंडल अभिलेख आदि के साथ साथ अशोक के सन्देशों का शिलालेख चित्रशिला, मत्स्य देश के राजा विराट का राज्य व उसके किले के भग्नावशेष बैराट गढ़, राजा सामूशाही के अत्याचारों से त्रस्त जनता के त्राण के लिए अवतरित चार महासू देवता, पाँच भाई पांडव तथा द्रोपदी से जुड़े वह प्रश्न जिनके अनुसार यहाँ बहुपतित्व प्रथा का प्रचलन माना जाता है। आज जब यहां के लोग शिक्षित हो गये हैं तो

अनुभव कर रहे हैं कि इन शोध कार्यों द्वारा हमारी संस्कृति को गलत ढंग से प्रस्तुत कर इस क्षेत्र के साथ जघन्य अपराध हुआ है। जिस प्रकार सभी फिल्मों की पटकथा घुमाफिरा कर अलग-अलग ढंग से एक प्रेम कहानी के चारों ओर परिक्रमा करती है उसी प्रकार तमाम लेखकों ने अपने शोध ग्रंथों तथा दूसरे समसामयिक लेखों द्वारा जौनसारी लोक-संस्कृति को यहां प्रचलित बहुपतित्व प्रथा के आइने में देखकर उसके गुण-दोष व यथार्थता जाने बिना अपने मनघडन्त तथ्यहीन असत्य विचारों की सोच में पिरोकर अभद्र तथा कुत्सित तरीके से व्यक्त करने की चेष्टा की है।

जिन सर्वमान्य प्रथाओं पर यहां की सामाजिक मान्यताओं की मुहर लगी है उन्हें केवल उपाधियां प्राप्त करने के लिए तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करने का कुत्सित प्रयास किया गया है जिसके फलस्वरूप इस क्षेत्र की संस्कृति की छवि खराब हो रही है। यहां के लोगों में आक्रोश और प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही है। लोग इसका प्रतिवाद चाहते हैं। जौनसार बावर एक आदिवासी क्षेत्र है। आदिवासियों की अपनी पृथक जीवन शैली और परम्पराएं होती हैं। यहां जीवन से मृत्यु तक के सारे संस्कार लोकगीतों में निबद्ध हैं।

अमर ऋचाएं हैं जिनमें इस लोक-संस्कृति की सम्पूर्ण सामाजिक सांस्कृतिक विरासत का इतिहास विद्यमान है। आर्यमूल के इस जौनसारी समाज का बड़ा रोचक और कौतूहलपूर्ण इतिहास है। यहां के लोग स्वयं को पांडवों का वंशज मानते हैं। यहां बहुपति व बहुपत्नी प्रथाओं का प्रचलन है। कुछ समय पूर्व यहां बाल-विवाह की भी प्रथा थी जो अब समाप्त हो गई है। हिन्दू धर्म के मानने वाले, शैव तथा वैष्णव मतावलम्बी जौनसार बावर के लोग स्वतंत्रता के छः दशक बीत जाने के बाद भी विकास के लिए छटपटा रहे हैं। राष्ट्र की मुख्य धारा से कोसों दूर हैं, अपनी संस्कृति से लोग कट रहे हैं। दूसरे शिक्षित समाजों के लोग अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिए छद्म साजिशों के कुत्सित प्रहारों से इसका अनेक प्रकार से दोहन कर अहित कर रहे हैं।

जौनसार बावर की भौगोलिक स्थिति

जौनसार बावर उत्तरी अक्षांश-30 डिग्री व 31 डिग्री के मध्य व पूर्वी देशान्तर 70 डिग्री से 78 डिग्री के मध्य स्थित है। इसके पूरब में यमुना नदी, उत्तर में उत्तरकाशी व हिमाचल प्रदेश का कुछ क्षेत्र, पश्चिम में टौंस नदी व दक्षिण में जनपद देहरादून का पछवाडून यमुना पुल तक का क्षेत्र आता है। इस परगने के क्षेत्र में एकमात्र खत देवघार टौंस नदी के पश्चिम में स्थित है। क्षेत्र पहाड़ी प्राकृतिक सम्पदा, सुदूर बीहड़, प्राचीन संस्कृति एवं भौगोलिक सम्पदा का भंडार है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 1450 फुट से 9500 फुट है। हरिपुर (कालसी) लगभग 1450 फुट तथा सबसे ऊँचा डिब्बा खडम्बा 9500 फुट है जबकि उपखण्ड हैडक्वाटर चकराता 6500 फुट के लगभग है। कुल क्षेत्रफल 1002-07 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।

महाकवि कालीदास ने देवभूमि को देवताओं की आत्मा तथा पृथ्वी को नापने की विधि रचित मापदण्ड माना है। उन्होंने अपने महाकाव्य कुमार सम्भव में देवभूमि के प्रति हृदय के उद्गार इस प्रकार प्रकट किये — अस्तुन्तरस्यां दिशि देवतात्मा । हिमालयो नाम्न नागाधिराज । पूर्वापरो तोय निधि व ग्राह्य । स्थितः पृथ्वीव्या मानदण्डः ।।

अर्थात् उत्तर दिशा में देवताओं की आत्मा पर्वतराज हिमालय स्थिर है। विधाता ने पूर्व से पश्चिम तक पृथ्वी को नापने के लिये मानो मापदण्ड रखा है। प्राकृतिक संरचना जौनसार बावर की भूतलीय आकृति व संरचना बहुत जटिल एवं विविधतापूर्ण है। हिम, वायु एवं तेज व बहती हुई जलधाराओं ने क्षेत्र को जन्म से लेकर आज तक धरातल को काट-काटकर संवारा है तो पृथ्वी को आन्तरिक शक्तियों ने उसे तोड़-मरोड़ कर उबड़-खाबड़

बनाने में अपनी प्रक्रिया सदियों से जारी रखी। यह पर्वतमयी भूमि बंजर पड़ी चट्टानों हिमाच्छादित पर्वतमालाओं जंगल एवं अनेक प्रकार की मिट्टियों, ऊंची चोटियाँ, ढालूदार जमीन, गहरी घाटियाँ, तेज बहने वाली नदियों (गाड़) यमुना, टौंस, पावर आदि तथा पथरीली भूमि की प्राकृतिक सजावट की विशेषतायें हैं। हिमालय के दक्षिण में स्थित होने के कारण इसमें रूपांतरिक तथा कठोर शैले पाई जाती हैं जो कि शिवालिक शैलो को विभाजित करती हैं।

जौनसारी जनजाति समाज में खास कर 68 प्रतिशत राजपूत तथा 21 प्रतिशत ब्राह्मण तथा 7 प्रतिशत अन्य दलित जातियों के लोग वास करते हैं। लोग देहरादून जिले के अन्य जातियों से भिन्न और इंगित हैं। यहाँ के लोग सांस्कृतिक, सामाजिक, पारम्परिक परिपाटियों एवं पौराणिक बन्धनों तक सीमित रह गये हैं। पावर, टौंस तथा जमुना नदियों से घिरा हुआ पहाड़ी एवं चट्टानों व पर्वत मालाओं की देवभूमि होने वाला गौरवान्वित क्षेत्र अपने में अनूठा है जो कि श्री चार महासू देवताओं के आशीर्वाद का दयोतक है, जहाँ प्राकृतिक मूल्यों की आज भी मान्यता है और वसुधैव कुटुम्ब की श्रेष्ठता विद्यमान है। जौनसार बावर के लोगों को प्राकृतिक दैविक-शक्ति एवं भौगोलिक सम्पदाओं का अनुभव है तथा वे इसका भरपूर सदुपयोग करते हैं। अनुभवी एवं बुजुर्ग लोगों को विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद भी जीवन-शैली में अमन-चौन तथा प्रेम-सदभाव, आदर-सम्मान के पहलुओं का अनुभव है, विषमताओं से जूझने व सामाजिक मूल्यों का आदर करने की निष्ठा है।

1. समुद्र तल से 1500 फुट से 2500 फुट तक ऊंचाई का भू-भाग, इस भू-भाग के अन्तर्गत यमुना टौंस नदी की घाटियाँ आती हैं। क्षेत्र के प्रमुख स्थान कालसी, त्यूनी, हरिपुर तथा हनोल आदि हैं तथा देवस्थल अशोक की शिला, लाखामण्डल, पवासी मन्दिर, हनोल, खाटवा व लखवाड आदि हैं। इस ऊंचाई के अन्तर्गत वनों में चौड़ी पत्ती के वृक्ष, चीड़, कैध, रई, किमू, खडिक तथा गौराल तथा साल पाये जाते हैं।

2. समुद्र तल से 2500 फुट से 5500 फुट ऊंचाई, इसके अन्तर्गत क्षेत्र का भाग आता है माह दिसम्बर, जनवरी व फरवरी में ऊंची चोटियाँ तथा बसे गांव बर्फ से आच्छादित रहते हैं। मुख्य स्थान चकराता, नागथात, मुन्डाली, मोल्टा, देवबन, जाखनी धार, कोटी-कनासर, चौरनी-लानी आदि हैं। इसमें नुकीली पत्ती के वन अधिक पाये जाते हैं। मुख्य वृक्ष बांज, मोरु, देवदार, थुनेर, बुरांस, रई, पांगर तथा नाना प्रकार की जड़ी बूटियाँ छोटी झाड़ियाँ व घास उत्पन्न होता है। इस क्षेत्र के चारागाह भेड़, बकरी, गाय, घोड़े आदि पाले जाते हैं। इस क्षेत्र में कृषि मुख्य साधन है। फसलों में मुख्यतः गेहूँ, जौ, मंडुवा, धान, ओगल, चौलाई और दालें पैदा की जाती हैं। पैसे कमाने वाली फसलों में मुख्यतः आलू, अदरक, सेब, मटर, अरबी, चूल्छू, आड़ू तथा प्याज आदि हैं।

जलवायु के हिसाब से क्षेत्र 1500 फीट तक उष्ण जलवायु के आठ माह गर्म मौसम तथा शेष नवम्बर से फरवरी तक ठंडा रहता है। रात्रि में भारी मात्रा में ओस (पाला) गिरता है। समशीतोष्ण जलवायु क्षेत्र 3500 फीट से 7500 फीट ऊंचाई के क्षेत्र में गर्मी कम तथा जाड़ा अधिक पड़ता है। ऊंचाई वाली चोटियों में हिमपात दिसम्बर से अप्रैल तक रहता है। सर्दी के मौसम में रात्रि को अधिक मात्रा में पाला पड़ता है। हिमपात होने पर निचले भागों में बर्फ दो-चार दिन में पिघल जाती है। सर्वाधिक वर्षा माह जुलाई व अगस्त में पड़ती है। इस क्षेत्र के निवासी मुख्य रूप से तीन ऋतुएं बनाते हैं प्रथम चैत्र, बैशाख ज्येष्ठ, अषाढ़। द्वितीय — सावन, भादों, असूज, कार्तिक । तृतीय मंगसीर, पोष, माघ, फागुन ।

प्रशासनिक कथाओं पर जौनसार टिहरी गढ़वाल के पश्चिम में जमुना (यमुना) पार होने के कारण यह क्षेत्र जमुना पार कहलाने

लगा जो कालान्तर में जौनसार हो गया और उत्तर में पावर नदी के कारण वह क्षेत्र बावर कहलाया। कालान्तर के अनुसार गंगाद्वार (हरिद्वार से खेत पर्वत) मध्य हिमालय तथा तमसा (टोंस) नदी से बौद्धाचल को केदारखण्ड और पूर्व की ओर काली-शारदा तक के क्षेत्र को मानस खण्ड बताया गया है।

हिमालय की रमणीक वादियों में जौनसार-बावर, देहरादून जिले का एक सब डिविजन है। यमुना तथा अमलावा नदी का संगम स्थल कालसी इस जनजाति के निवास स्थल का प्रारम्भ है और इसकी सीमाओं पर यमुना, टोंस और पावर व रिखनाड नदियाँ अविरल प्रवाह करती हैं चकराता सब डिविजन मुख्यालय है जहाँ एस.डी.एम. रहता है। क्षेत्र को 39 खतों में बांटा गया है जिसमें कुल 358 गांव हैं दो ब्लाक मुख्यालय — चकराता व कालसी हैं। सन् 1953 ई० में उत्तर प्रदेश पंचायत राज एक्ट 1947 इस क्षेत्र में लागू हुआ है और सम्पूर्ण क्षेत्र में ग्राम सभायें, ग्राम पंचायतें व न्याय पंचायतें चुनी गईं। सब डिविजन को सुचारु व्यवस्था हेतु जिला कलेक्टर देहरादून के आधीन जिला विकास अधिकारी, परगना अधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, कानूनगो, पटवारी, जमीनों के अतिरिक्त विभिन्न विभागों विकास कार्य अधिकारियों का जनपद स्तर से लेकर क्षेत्रीय व ग्राम स्तर तक जाल बिछा है इस क्षेत्र में आज भी सुरक्षा व्यवस्था का कानूनी अधिकार पटवारी व वन एवं वनस्पति क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल में 64.3 प्रतिशत वन एवं वनस्पति पाई जाती है, समशीतोष्ण जलवायु तथ सर्दी व बर्फ वाली जलवायु में उगने वाले पेड़-पौधों प्रचुर मात्रा में हैं। प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का अपूर्व भंडार हैं। मशरूम, सेब, अदरक, मटर, आलू के लिये उपयोगी जलवायु एवं उपजाऊ मिट्टी है। पशु-पक्षियों एवं जंगली जानवरों का विहार क्षेत्र कृषि-प्रदान होने की वजह से पालतू जानवरों का महत्वपूर्ण स्थान है। गाय-बैल, भेड़-बकरी, भैंस प्रत्येक किसान के पास होंगे। जंगलों में जंगली जानवर बाघ, हिरन, वारासीगा, घोरड़, चीता, सुअर, भालू, जंगली मुर्गे आदि स्वतन्त्र-विहार करते हैं। 2 जनवरी 2004 को त्यूनी में सब तहसील का शिलान्यास किया गया है।

यथा-खण्डः पञ्च हिमालयस्य कथिता नैपाल कुर्माचलौ। केदारोथ जलधरोथ रुचिरः कश्मीर संज्ञोतियमः ।।

भावार्थ पहला खण्ड नेपाल देश, दूसरा खण्ड कुर्माचल (कुमाऊँ), तीसरा केदारखण्ड, चौथा जालन्धर, पाँचवां कश्मीर खण्ड है। पुराण में केदारखण्ड की सीमा इस श्लोक से स्पष्ट होती है-गंगा द्वार मर्यादं श्रेतांतं वरवर्णिनि । तमसातटतः पूर्व मार्ग्य बौद्ध चलं शुभम् ।।

इस श्लोक में जो केदारखण्ड का भूगोल महर्षि वेद व्यास ने लिखा है, उसके अनुसार पूर्व में बौद्धाचल (हिमालय की किसी चोटी का नाम), पश्चिम में तमसा नदी (टोंस नदी), दक्षिण में गंगा द्वार (हरिद्वार), उत्तर में स्वैतात पर्वत (हिमालय की उत्तरी पर्वत श्रेणियाँ) और उसकी लम्बाई 50 योजन, चौड़ाई तीस योजन है। यह केदारखण्ड भूमि परम पावन बैकुण्ठ की तरह है और भारत की भूमि से पृथक् है। स्कन्दपुराण में वर्णित इसी केदारखण्ड में यमुना व टोंस नदी के बीच बसा भू-भाग ही आज जौनसार बावर कहा जाता है। चूँकि स्कन्दपुराण के रचयिता वेद व्यास जी ने चकराता के पास 9232 फीट की ऊँचाई पर स्थित देववन के व्यास शिखर पर तपस्या की थी। जौनसार बावर में कालसी, हरिपुर, बैराटगढ़, नागथात, गौराघाटी, लाखामण्डल, देववन (व्यास शिखर), कनासर हनोल, मैद्रथ, चक्रथान आदि पौराणिक स्थान होने के कारण इसका अपना महत्व है।

जौनसार बावर का क्षेत्र उत्तरी अक्षांश 30.31 एवं 31.33 तथा पूर्वी देशान्तर 77.45 एवं 78.72 के मध्य है। जौनसार बावर के तीन उपखण्ड हैं। पहला जौनसार जिसके उत्तर में लोहखण्डी, पूरब में यमुना नदी व पश्चिम में टोंस नदी है। संगम तक यह एक त्रिभुजाकार क्षेत्र है, जिसका शीर्ष कालसी है। यह उत्तर से

दक्षिण 28 किमी० विस्तृत है। दूसरा खण्ड लोहखण्डी है। जिसकी लम्बाई 8 किमी० है। लेकिन पूरब से पश्चिम पूरे क्षेत्र के आरपार चौड़ा है। इसके बाद बावर जिसकी लम्बाई 16 किमी० है। यह जौनसार बावर के अण्डाकार क्षेत्र का आखिरी हिस्सा है। यानि तीसरा क्षेत्र देवधार टेढ़े-मेढ़े आकार का क्षेत्र है जिसमें कई स्थानों पर हिमाचल प्रदेश के क्षेत्र अन्दर तक घुसे हुए हैं। जौनसार बावर में एक के बाद एक पहाड़ियों व घाटियों का सिलसिला है। जौनसार बावर की एक बड़ी भौगोलिक विशेषता एक पहाड़ी धार टोंस के जलागम क्षेत्र को जमुना के जलागम क्षेत्र से अलग करती है। कालसी के निकट हरीपुर से यह धार चकराता देववन तक जाती है और वहाँ से उत्तर-पूर्व दिशा में लोहखण्डी से ऊपर खडम्बा तक और वेराट में जहाँ पर मसूरी की सड़क इस धार पर पहुँचती है। यहाँ एक चोटी समुद्रतल से 7.399 फीट ऊँची है। क्यावा के पास एक चोटी 6558 फीट ऊँची है। इसके बाद देववन में 9331 फीट ऊँची चोटी है। एक चोटी जिससे एक श्रृंखला उत्तर-पूर्व को जाती है। पर्वत श्रृंखला में बाजामारा चोटी 9.536 फीट है। इससे आगे तीन चोटियाँ हैं जिसमें एक चोटी 10.075 फीट सबसे ऊँची है। देववन व देववन से आगे की चारों चोटियाँ चकराता छावनी से दिखती हैं। यहाँ से यह धार जमना तक है। मुख्य श्रृंखला से दोनों ओर पहाड़ी स्कन्ध निकले हैं। हर धार से भी पार्श्व स्कन्ध निकले हैं। इस बीच की घाटियों में बहने वाली सरिताओं (गाड़ों) का पानी पूर्व में जमुना की सहायिकाओं के जरिये जमुना से तथा पश्चिम में टोंस की सहायिकाओं के साथ टोंस में मिल जाता है। जौनसार बावर 2 तिहाई वनाच्छादित है। यहाँ बीहड़ ज्यादा हैं, जिसमें समतल जमीन बहुत कम है। पहाड़ बहुत ऊबड़-खाबड़ व खड़े हैं। घाटियाँ सभी गहरी व तेजी से नीचे उतरती हैं। खड़ी चट्टानें हैं जिन पर बारीक घास उगाती है। जौनसार बावर की असली शोभा तो देवदार के वृक्ष हैं। इनको स्थानीय भाषा में केंऊ कहते हैं—

जौनसार बावर के साथ जमुना पार जौनपुर क्षेत्र है जो जौनसार के रीति-रिवाज, बोली भाषा से मिलता-जुलता है। जिससे जौनसार की कोरूखत, बहलाड़, लखवाड़ व फैंटाड़ तथा सेली खत मिलती है। जौनपुर के नैनबाग जमुना ब्रिज (पुल) सिलवाड़, पट्टी आदि क्षेत्र मिलते हैं। जिनमें आपस में रिश्ते भी हैं। यमुना घाटी में खत बौंदर सेली रंवाई क्षेत्र से मिलती हैं जिनमें लाखामण्डल आदि क्षेत्र मुख्य हैं।

इसी तरह तमसा नदी घाटी में हनोल क्षेत्र खत बावर देवधार-कांडोई भरम व खत दसऊ लेलटा व कालसी के साथ हिमाचल के सिरमौर क्षेत्र व रंवाई के पासविल क्षेत्र आपस में मिलते हैं। ऊँची जगह पर नवम्बर से मार्च तक बर्फ पड़ती है व कड़ाके की ठंड पड़ती है। हिमपात कई-कई दिनों तक होता है। ऊँची जगह 9-10 फीट तक बर्फ पड़ती है। बहुत सी जगह मार्च तक बर्फ से रास्ते बन्द रहते हैं। ऊँची जगहों में चकराता, देववन, खडम्बा, मुडाली, कथीयान, खाटवा, बनीयाना, कुनैन, सैज, भूट फनार, नाडा, रडू मुन्धौल, पटियूड़ चुरानी, बैराट, बुरास्टी, मेंवडा, गौराघाटी आदि हैं।

बाँज के वृक्ष 4 हजार फीट के ऊपर होते हैं। लेकिन 6 से 8 हजार फीट में तो यह काफी घना होता है। इसकी लकड़ी कड़ी व गौठदार होती है तथा इसका इस्तेमाल कृषि उपकरण बनाने व जलावन के लिए होता है। इन पेड़ों के बीच-बीच में बुरांस के पेड़ भी होते हैं। नमी वाली जमीन में बाँज के साथ रिंगाल भी होती है जिसका गिल्टा, सूपो, टोपरी, मछनो, सकेडी, कंडी, दावना आदि रोजमर्रा के उपयोग की चीजें बनायी जाती हैं। बाँज से कड़ी प्रजाति मोरु (तिलौंज) व खर्सु मिलता है। इनकी लकड़ी भी कृषि यन्त्रों के बनाने के काम आती है। इन बाँज वनों में पांगर व सायकामोर भी पाया जाता है।

विभिन्न शंकु वृक्षों में देवदार, रई, मोरडा, रागा (रई), मुंडाली में पहले 26 फीट मोटे व 200 फीट ऊँचे रई के पेड़ फॉरेस्ट रिकॉर्ड में दर्ज हैं। इसके अलावा सुरई, थुनेर, पापड़ी, पांगर, अखरोट, मेहल, हौली, वनपीपल, मजनु, हैजल, मोईड़ा या मेडू के वृक्ष हैं। यमुना टॉस के अलावा यहाँ छोटी-छोटी गाड़ें हैं जिनसे जमीन की सिंचाई की जाती है। इसमें से कूले (छोटी नहरें) निकालकर काफी दूर गाड़ से ऊँचे जगह की जमीन भी सिंचित की जाती है। गाड़ों से हर गाँव के पास कुछ सिंचित जमीनें हैं जिनको क्यारी कहा जाता है। जिसमें धान, आलू व अदरक की फसल होती है। धान को स्थानीय भाषा में साठी कहते हैं।

जौनसार बावर में चूने पत्थर की चट्टानें हैं। कहीं-कहीं स्लेटी पत्थर भी हैं जो काफी पतले होते हैं व मकानों की छतों पर बिछाने के काम आते हैं, जिन्हें जानी कहा जाता है। थोड़ी मोटी जानी मकानों के आंगनों में बिछाई जाती है। कालसी व जलोटा पुल के पास लोहे (हेमेटाइट) लौह अयस्क भी है। कालसी ब्लॉक की लोहारी गास्की में लोहशिला, पुनाह में ताम्बा तथा भौड़ा में सुरमा तथा पलान में जस्ता की खोज जनरल वेरस्फोर्ड लवेट ने करवाई थी। जिलावट जलडमरू के पास टगड़ी जल प्रपात से बिजली बनाने की योजना भी बनाई गई थी। यह योजना आज से 115 वर्ष पहले 1900 के आसपास बनाई गई थी। कोटी कनासर, बिनाल व सिली गाड़ के स्कन्धों पर कुनैन जंगल व दारा गाड़ के ऊपर तुतवा मोरा व लखौ जंगल हैं। पश्चिम में कथियान कोटी व पंच कोटी जंगल हैं। बुधेर में थाले व घाटियों में एक मील चौड़ा व लम्बाई में 2 मील का जंगल है। कालसी में साल आदि के जंगल हैं।

सरिता व नदियाँ

यमुना व गंगा नदी को एक पहाड़ी धार अलग करती है। यह धार बन्दरपूँछ समूह से शुरू होकर मसूरी श्रृंखला में सुरकंडा में समाप्त हो जाती है। यह उत्तरकाशी व टिहरी जिले से जौनसार के खत बौन्दर में प्रविष्ट होती है जो देववन से साढ़े 12 मील पूरब में पड़ता है। यहाँ रिखनाड़ गाड़ सरिता मिलती है। जो जिला उत्तरकाशी के रंवाई के रामा सिराई (पुरोला ब्लॉक) को अलग करती है। यमुना सामान्यतः 8 मील चलकर कुथनूगाड़ में जो मोहना बनगाँव आदि खतों से होकर आती है, मिलती है। यमुना 20 मील चलकर दक्षिणी पूर्वी कोने पर पहुँच कर पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। करीब सात मील आगे एक सरिता अमलावा गाड़ यमुना में मिल जाती है। अमलावा देववन पहाड़ी की दक्षिणी तलहटी से निकलती है।

देववन

देववन चकराता से 16 किमी० की दूरी पर एक रमणीक स्थान है। यहाँ पर व्यास शिखर है। जहाँ व्यास मुनि ने तप किया था। देववन की ऊँचाई समुद्रतल से 9232 फीट है। यहाँ पर फॉरेस्ट विभाग का डाक बंगला है। यह ब्रिटिश काल का बना है। पुनः रिपेयर करके इसका उद्घाटन राज्यपाल कन्हैया लाल माणिक लाल मुन्शी जी ने 1953 ई० में किया था। इस बंगले में दो सुइट बने हैं। बंगले के साथ दूब का एक बड़ा मैदान (लॉन) है। गेस्ट हाउस में व साथ बने रसोई घर में डक्कन टाइप चिमनियाँ बनी हैं। पानी एक किमी० दूर से जेनरेटर से लिफ्ट किया जाता है। यहाँ से हिमालय की बहुत सी प्रसिद्ध चोटियाँ दिखती हैं। इनमें बन्दरपूँछ 6,320 मीटर, श्रीकण्ठ 6,728 मीटर, धौलागिरी 8,172 फीट प्रमुख हैं।

टाइगर फॉल

चकराता से 16 किमी० दूर लाखामण्डल रोड पर टाइगर फॉल है जिसकी ऊँचाई 240 फीट है। इसकी विशेषता यह है कि यह इस ऊँचाई से सीधा एक ही बार में गिरता है। इसकी गिरने की

आवाज शेर के दहाड़ने जैसी है। जिसकी वजह से इसे टाइगर फॉल कहा जाता है। तीनों ओर पहाड़ियों से घिरे टाइगर फॉल को दूर से पूरा नहीं देखा जा सकता है। इसे देखने का आनन्द लेने के लिए इसके नजदीक जाना होता है। इस जगह पर अंग्रेजों द्वारा विद्युत गृह बनाने की योजना थी जिसके लिए सामान भी काफी मात्रा में पहुँचाया जा चुका था लेकिन देश आजाद हो जाने के बाद यह योजना पूरी नहीं की जा सकी। लेकिन यह वाटर फॉल पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त सुन्दर है यह वॉटर फॉल पूरे उत्तराखण्ड में अपने तरह का अकेला ही है। पैदल मार्ग द्वारा चकराता से टाइगर फाल केवल 5 कि०मी० है।

खड़म्बा

खड़म्बा शिखर जिला देहरादून की सबसे ऊँची चोटी है। इसकी ऊँचाई लगभग 10 हजार 75 फीट है। इस शिखर के आस-पास मुनाल नाम का सुन्दर पक्षी पाया जाता है। मुनाल उत्तराखण्ड का राज्य पक्षी भी है। इस शिखर पर लकड़ी की मोटी बल्लियाँ लगाकर बैठने की व्यवस्था की गई है। यहाँ से रामा सिराई, हरकी दूण तक का क्षेत्र मनोहर दिखता है जो जिला उत्तरकाशी के रंवाई क्षेत्र में है। देहरादून व सहारनपुर का भी काफी क्षेत्र यहाँ से दिखाई देता है। यहाँ पर स्थानीय लोग अपनी महिलाओं व बच्चों को नहीं जाने देते हैं तथा जो भी जाते हैं वह चुपचाप इस जगह को देखकर आ जाते हैं। लोग मात्रियों (परियों) से डरते हैं। लोगों का मत है इस ऊँची पहाड़ी पर उनका निवास है। खैर जो भी हो खड़म्बा शिखर बहुत ही सुन्दर व रमणीक है। इसका आनन्द तो वहाँ पर जाकर ही लिया जा सकता है। यह जगह देववन से 20 किमी० जंगलात मोटर मार्ग पर है।

मुंडाली

मुंडाली खड़म्बा से 8 किमी०, चकराता से 32 किमी० दूर है। यह समुद्रतल से 9000 फीट की ऊँचाई पर है। यह जगह स्कीइंग के लिए भी काफी उपयोगी है। यहाँ पर फॉरेस्ट हाउस बने हैं। यहाँ ब्रिटिश काल में अधिकारियों का कारवां पैदल यात्रा करते हुए पहुँचा था। अब यहाँ तक जंगलात का मोटर मार्ग बना है। यह जगह खतसिलगाँव बावर में रिजर्व फॉरेस्ट में है। ब्रिटिश काल में यहाँ पर गर्मियों में अंग्रेज अधिकारी मसूरी से शिमला जाते हुए रुकते थे। यह सड़क अपर शिमला रोड कहलाती थी। इसका बोर्ड आज तक यहाँ लगा है तथा बंगले के निर्माण का वर्ष सन् 1882 ई० अंकित है।

जौनसार बावर की नदियाँ

जौनसार बावर में यमुना नदी व टॉस दोनों ओर बहती हैं। यह दोनों नदियाँ जौनसार बावर की सीमा भी निर्धारित करती हैं। रिखनाड़ गाड़, जो यमुना की सहायक नदी है, जौनसार बावर को जिला उत्तरकाशी से अलग करती है। यमुना नदी पछवादून से भी जौनसार बावर को अलग करती है।

यमुना नदी

पौराणिक कथा है कि यमुना नदी सूर्य भगवान की पुत्री तथा यमराज की बहन है तथा श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में कालिन्दी नाम से प्रसिद्ध है। यह भोग, मोक्ष व आयु की दाता है। यमुना जी का उद्गम स्थान यमुनोत्री कहलाता है। यह नदी हिमालय के बन्दरपूँछ पर्वत समूह के यमुनोत्री काण्ठा से निकलती है। गरम जल के स्रोत करीब 500 मीटर नीचे हैं। जहाँ कई धाराएँ मिलकर यमुना कहलाती है। गरम जल का ताप 27.7 डिग्री तक है। इस गरम जल में चावल अच्छी तरह पक जाता है। यमुनोत्री धाम उत्तरकाशी जिले की गीठ पट्टी में है। स्कन्द पुराण में कहा गया है कि जहाँ यमुना का उद्गम है, उसे यमुना तीर्थ कहा जाता है। यहाँ सूर्यकुंड भी है। शायद इसी

कारण यमुना को सूर्य पुत्री कहा जाता होगा। इस क्षेत्र में ब्रह्मकमल भी होते हैं। यमुना नदी सामान्यतः दक्षिण की तरफ 32 किमी० जौनसार के दक्षिणी पूर्वी कोने पर पहुँचती है। यहाँ से यह पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। करीब 16 किमी० आगे एक गाड़ अमलावा इसके साथ संगम बनाती है। अमलावा देववन पहाड़ी की दक्षिणी तलहटी से निकलती है। यमुना नदी जौनसार बावर के चकराता व कालसी ब्लॉकों को उत्तरकाशी के नौगाँव व जिला टिहरी के जौनपुर ब्लॉकों से अलग करती है। यह जौनसार की सीमा पर किसी प्रहरी की तरह तैनात होकर बहती है।

यमुना नदी यमुनोत्री से 140 किमी० बहकर कालसी में 800 मीटर दूरी पर प्रवेश करती है। यमुनोत्री समुद्रतल से 3185 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। इतनी दूर से व ऊँचाई से जब यमुना नदी कालसी पहुँचती है तो वह अपने तीव्र बहाव के साथ भारी मात्रा में बजरी पत्थर लाती है जिससे यहाँ काफी बजरी पत्थर इकट्ठा हो जाता है। जिसके कारण यहाँ बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है व समय-समय पर काफी नुकसान होता है। जौनसार में यमुना नदी के किनारे लाखामण्डल व कालसी बहुत प्राचीन नगर हैं। रिखनाव गाड़, गुठाड़ गाड़, मिगाड़ गाड़, सैलीगाड़, कुथनऊ गाड़ व कालसी के पास अमलावा व टौंस यमुना में संगम बनाती हैं।

पश्चिमी टौंस

यह यमुना की प्रमुख सहायक नदी है। यह यमुनोत्री चोटी के उत्तर से निकलती है। इस जगह का नाम हरकीदून है। शुरू में इस नदी का नाम सूपिन है। करीब 48 किमी० बहने के बाद नैटवाड़ में तेज गति से बहने वाली रूपिन नदी इससे मिल जाती है। नैटवाड़ से यह संयुक्त नदी टौंस कहलाती है। इसके बाद कई किमी० दूरी तय करने के बाद यह बावर खत में प्रवेश करती है। यहाँ यह धार्मिक नगर हनोल से बहती खूनी गाड़ व दाड़मी गाड़ सरिता को अपने साथ मिलाती त्यूणी पहुँचती है जहाँ पर रायगी व कोटी के पास पावर नदी टौंस में मिलती है। पावर नदी का प्रभाव बहुत तीव्र है। यह हिमाचल के बूसैर क्षेत्र से होती हुई धार्मिक जगह हाटकोटी के निकट से उत्तरकाशी के आराकोट बंगाण से होती हुई 92 किमी० चलकर टौंस में संगम बनाती है। नैटवाड़ से पावर व टौंस संगम की दूरी लगभग 30 किमी० है।

त्यूणी के बाद टौंस नदी देवधार खत के साथ बहती है और इसमें दारा गाड़ मिल जाती है। उसके बाद यह हिमाचल व जौनसार के साथ सीमा बनाती हुई कालसी पहुँचती है। टौंस में कुछ सरिताएं जौनसार क्षेत्र व कुछ हिमाचल प्रदेश से आकर मिलती हैं। जैसे सालव खड्ड जो अटाल के पास खत देवधार में मिलता है। कालसी में यह नदी यमुना से संगम बनाती है। टौंस नदी में कोटी में एक बन्ध है तथा सुरंग द्वारा इछाड़ी पावर हाउस में विद्युत उत्पादन होता है। टौंस नदी में यमुना से तीन गुना अधिक जल है, लेकिन यमुना नदी अधिक प्रतिष्ठित नदी है। इस कारण टौंस को यमुना की सहायक नदी कहा जाता है। लोकमत है कि टौंस नदी सूपिन राक्षसी से बनी है। इस कारण इस नदी को कर्मनाशा नदी कहा जाता है। तभी तो इस नदी से कहीं भी कोई जमीन सिंचित नहीं होती है न ही इस नदी का जल कहीं पीने के काम आता है। वैसे भी टौंस नदी देखने में काफी डरावनी नदी है।

जौनसार क्षेत्र का ऐतिहासिक परिचय

महाभारत के अनुसार, शिव-पार्वती विवाह के पश्चात् कैलाश में आनंदपूर्वक रह रहे थे। एक दिन देवताओं ने आकर भगवान शिव से कहा कि हे देव आप कृपा करके अपना तेज रोक लें क्योंकि पृथ्वी पर इसे कोई भी सह नहीं पाएगा। देवताओं की बात मानते हुए भगवान ने तथास्तु कहा, लेकिन कुछ तेज स्थलित होकर

पृथ्वी में गिर पड़ा, जिसे देवताओं के आग्रह पर अग्निदेव ने वायु देवता की सहायता से धारण किया। तेज श्वेत पर्वत में परिणित हो गया, उस पर दिव्य सरकण्डों का वन भी उग आया जो अग्नि और सूर्य की भांति तेजस्वी प्रतीत हो रहा था। फिर शिव-पार्वती तपस्या में लीन हो गये। वाल्मीकि रामायण में हिमालय पुत्री नन्दा की बड़ी बहन गंगा को बताया गया है। देवताओं की राय से अग्नि ने शिव तेज गंगा में अभिसिक्त कर दिया। तत्पश्चात् गंगा ने अग्नि देव से कहा कि इस तेज को धारण करने में असमर्थ हूँ। इस पर अग्नि देव ने कहा कि हे देवी! हिमालय के पार्श्व भाग में इसे स्थापित कीजिए। गंगा ने ऐसा ही किया। स्नान कर लौटते हुए छः कृतिकाओं ने तेज रूपी बालक कुमार को देखा। उनके स्तनों से दूध उमड़ पड़ा और अत्यन्त वात्सल्य से वशीभूत हो उन्होंने अपना दूध कुमार को पिलाया व बालक का पालन किया। यह बालक कुमार षडानन शिव के स्कन्दित (स्थलित) होने से स्कन्द अथवा गुम्फा में मिलने से गुह सुब्रह्मण्य आदि नामों से जाना जाता है। स्कन्द को देव सेनापति पद देवताओं द्वारा दिया गया है।

यमुना उपत्यका-यमुनोत्री के लेखक एवं विद्वान श्री राजेन्द्र राणा ने लिखा है कि स्कन्द स्वामी का जन्म लाखामण्डल के पुड़िया ग्राम में हुआ था। वह लिखते हैं कि उनका जन्म सरकण्डे के वन में पुड़ेधुले (गठर) पर रखे जाने से उस जगह का नाम पुड़िया हो गया। यह स्थान वर्निगाड़ से 4 किलोमीटर दूर है। यह चकराता मोटर मार्ग पर लाखामण्डल से एक किलोमीटर पहले है। वहाँ वह गुफा आज भी देखी जा सकती है।

राणा जी आगे लिखते हैं कि स्कन्द पुराण में जिसे महिसागर संगम कहा गया उसे रामायण महाभारत तथा अन्य पुराणों में बिन्दुसर कहा गया है। देवताओं ने वहाँ शिवलिंगों की स्थापना की थी जिस कारण वहाँ लाखों शिवलिंग स्थापित हो गये थे। इसी कारण इस क्षेत्र को लाखामण्डल कहा जाने लगा। वह बिन्दुसर को ढोकाणा से शेरसौड़ तक मानते हैं व मय दानव के रहने का स्थान मोरावा के रोध मानते हैं।

उन्होंने ऐसे अकाट्य तथ्य दिये हैं जिसको मानने को मन करता है। यदि यह सत्य मान लिया जाय तो पौराणिक काल में जौनसार बावर (यामून) का अति महत्व रहा होगा। वैसे जौनसार बावर के आदि देवता महासू देवता की कथा में यह कहा जाता है कि कार्तिकेय स्वामी जब गणेश जी की जीत से दुःखी हो गए तो उन्होंने अपने मांस को स्वयं काट कर ढेरी बना दी व समुद्र में फेंक दी जिससे महासू की उत्पत्ति हुई। पूरी कथा विस्तार से पुस्तक में है।

ऋग्वैदिक आर्य ही आरम्भिक आर्य थे। प्रमुख राजनीतिक घटना दासराज युद्ध है। यह युद्ध किरात राजा भेद व आर्य सम्राट सुदास के बीच लड़ा गया था। यमुना के किनारे हुई इस लड़ाई में भेद मारा गया व आर्यों की विजय हुई थी।

महाभारत के अनुसार, युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उत्तर से गंगा जल, चंवर पुष्प, बल सम्पन्न औषधियाँ, पीपीलिका, सोना तथा मधु भेंट में आया था। पहाड़ से जागूड़ (जोगड़ा), रामठ-खस तथा तड़णादिक जातियाँ शामिल हुई थी।

उद्योग पर्व में वर्णित महाभारत के युद्ध में दुर्योधन की ओर से लड़ने वालों को पर्वतीया कहा गया है। पर्वतीया उत्तरकाशी के एक क्षेत्र के खसों को कहा जाता है, जहाँ दुर्योधन का मंदिर है। उस क्षेत्र में पांडवों की पूजा नहीं की जाती है। इसी क्षेत्र में कर्ण मंदिर भी है। कुण्डि लोग पांडवों के पक्ष में लड़े थे। महाभारत में सुबाहु को कुण्डिपति कहा गया है। इनकी राजधानी श्रीनगर में थी। दूसरे विद्वानों के अनुसार कुण्डि राजा विराट भी थे जिसकी राजधानी के खण्डहर विराटगढ़ चकराता मसूरी मार्ग पर आज भी विद्यमान हैं। जौनसार बावर जो कुण्डि राज्य में था, पांडव की यहाँ हर गाँव में पूजा होती है और पांडव नृत्य मंडावणा होता है तथा पांडवों के नाम की चौरी हर गाँव में ठौर के पास है।

पाणिनी ने, जिनका समय 2700 वर्ष पहले माना गया है। यहाँ पर कुछ राज्यों के नाम दिए हैं जो ईसा से सात सौ वर्ष पहले थे। इन जनपदों के नाम पाणिनी के अनुसार इस प्रकार थे—कलकूट, कलुन, कलियुगधर आदि। इसमें से कलकूट जमना का यामून प्रदेश था। कलकूट जौनसार बावर (यामून) देश का कालसी ही था।

अपनी शिक्षा पूरी होने के बाद पांडव हस्तिनापुर लौट गए। पांडवों से ईर्ष्या रखने वाले दुर्योधन ने एक चाल चली। जिसमें कहा गया कि पांडव अपनी माता को साथ लेकर वर्णावत जाए, जहाँ पहले ही लीसे (लाख) के साथ गारा बनाकर एक महल तैयार कर लिया था और महल में लकड़ियों का भी खूब इस्तेमाल किया गया। योजना यह थी कि सोते हुए पांडवों को आग में जला कर मार डाला जाए, लेकिन उनके चाचा विदुर ने पहले ही महल से एक सुरंग का निर्माण करवा रखा था, जिसकी पांडवों को जानकारी दे रखी थी। जब पुरोचन ने आग लगाई तो पांडव उस सुरंग के रास्ते से भाग गए थे। मि० वाल्टन ने उस सुरंग का संकरा मार्ग ढूँढ़ निकाला था। वाल्टन ने अपने गजेटियर में लिखा है कि एक सुरंग चट्टानों के नीचे नीचे यमुना नदी के तट पर निकलती थी। पांडव सुरंग द्वारा निकल कर गुप्त रूप से जंगलों में रहने लगे। इसी कालखण्ड में भीम ने इस क्षेत्र के दो मुखियाओं को मारा जो बड़े ही अत्याचारी थे। इनमें हिडिम्ब की बहन के साथ भीमसेन ने गन्धर्व विवाह कर लिया था। इसके बाद एकचक्रा नगरी में भीम ने एक राक्षस को मारा, जिसका नाम बकासुर था। जौनसार बावर में हनोल का पुराना नाम चक्रा नगरी था।

मनु महाराज ने मनुस्मृति में चार प्रकार के विवाह बताए हैं—1. ब्रह्म, 2. गन्धर्व, 3. राक्षस, 4. असुर। इसमें प्रथम विवाह को माँ-बाप की मर्जी से वैदिक विधि से किया जाता है। दूसरी गन्धर्व विधि है जिसमें बालिग लड़का व लड़की आपस में पति-पत्नी स्वीकृत कर लेते हैं। तीसरी विधि में पिता के घर से कन्या का अपहरण किया जाता है। चौथी विधि असुर में जबरदस्ती बलात्कार किया जाता है।

मौर्यकाल ईसा पूर्व 324-187 वर्ष माना जाता है। मौर्यकाल से जौनसार बावर पर भी प्रकाश पड़ता है। कालसी शिलालेख व कुछ ऐतिहासिक तथ्यों से ज्ञात होता है कि यह प्रान्त भी मौर्य साम्राज्य का विजित क्षेत्र था। अशोक ने अपनी जवानी में खसों पर विजय प्राप्त की थी। अशोक का शिलालेख कालसी (जौनसार) में होने से यह तो साफ हो जाता है कि यह क्षेत्र कभी अशोक के साम्राज्य में था। शायद चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में ही जौनसार मौर्य राज्य में सम्मिलित हो गया होगा। सम्राट अशोक का कालसी शिलालेख जो अन्य शिलालेखों में सबसे ज्यादा स्पष्ट है जिसमें 5 यवन (ग्रीक) राजाओं के नाम 13वीं राज आज्ञा में हैं—1. एण्टिओकस, 2. तालेमी, 3. एण्टिगोनस, 4. मगस, 5. अलेक्जेंडर।

हरीपुर के पास राजा रिसालू की समाधि व टिकरी (दुर्ग) का वर्णन जौनसार बावर के पुराने काल को दोहराता है। रिसालू दो हुए हैं या एक, यह अभी तक स्पष्ट नहीं है। इतिहासकारों के अनुसार रिसालू राजा शालिवाहन (प्रथम) का पुत्र था। इसी वंश के शालिवाहन द्वितीय का पुत्र हॉसू बताया गया है। हॉसू प्लासी वंश (सिरमौर राजवंश) का प्रथम राजा था। वैसे शगजनी से जैसलमेर नामक पुस्तक में राजा शालिवाहन को यदुवंशी बताया गया है। वंशावली में राजा गजबाहु का पुत्र शालिवाहन प्रथम के 15 पुत्रों में रिसालू भी था जिसने पंजाब से लगे पहाड़ी प्रान्तों पर विजय प्राप्त की थी। शुंग वंश का सम्बन्ध जौनसार बावर से रहा या नहीं, इसका सिवाय इसके कि अम्बाला से जो भद्रमित्र की मृणमुद्रा प्राप्त हुई उसकी लिपि शुंगकालीन बताई गई है। बाकी अन्धकार में है, इसके अतिरिक्त कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

कुणिन्द मौर्य व शुंगकाल में ही स्वतन्त्र राज्य बन गया था। कुणिन्द महाराजा अमोघभूति प्रतापी राजा रहे। इनकी मुद्राएं जौनसार बावर में भी प्राप्त हुई हैं। अमोघभूति ने मौर्य एवं यूनानी शासन के पतन के बाद अपना खोया राज्य तो प्राप्त किया ही, साथ ही अन्य प्रदेश भी विजित कर लिए थे। राजा अमोघभूति के राज्य में हिमाचल प्रदेश (जालन्धर खण्ड) गढ़वाल-कुमाऊँ के अतिरिक्त अम्बाला, सहारनपुर तथा बिजनौर जनपद भी शामिल थे। अमोघभूति कुणिन्द राजा की राजधानी जौनसार के कालसी में स्थित थी। पुरोला देवदुंगा अश्वमेध स्थल जो कुणिन्द राजा अमोघभूति ने बनाया था, वहाँ भी इस राजा की मुद्राएं प्राप्त हुई थी।

विद्वान इस राजवंश को छठी व सातवीं शताब्दी का मानते हैं। इस राजवंश की 11 पीढ़ियों के नृपतियों का वर्णन है। जिसकी अवधि प्राचीन गुप्त काल से हर्षवर्धन के काल तक रही होगी। शिलालेख के अनुसार पर्वतगढ़ों (शैल दुर्गाणी) के शासक उनके अधीन थे। वह सिंहपुर से राज्य करते थे। उस कालखण्ड में जौनसार यामून देश यदुवंशियों के अधीन हो गया था। भोज वर्मन के बेलाव ताम्रपत्र के अनुसार वर्मनों के पूर्वज सिंहपुर के शासक थे। यह भी अनुमान है कि छागलेश का राज्य सातवीं शताब्दी में यदुवंशियों के अधीन हो गया था। इस राजवंश का प्रथम राजा श्रीसैन वर्मन था और जौनसार बाबर शायद इस राजवंश के अधीन था। चीनी यात्री के अनुसार उस राज्य की पूर्वी सीमा पर गंगा बहती थी। यमुना इस राज्य के मध्य में बहती थी। गढ़वाल, सिरमौर व सहारनपुर, अम्बाला आदि इस राज्य में थे। इस राजवंश में भी यदि यमुना मध्य में बहती थी तो जौनसार बावर यामून देश भी इस राज्य के अधीन रहा होगा।

एकचक्रा का बाहुबाण वंश अष्टानाथ सूरी के एकचक्रा पुरी बाहु बाणवंशीय 7 राजाओं के नाम मिलते हैं। विद्वान कटोच लिखते हैं कि एकचक्रा की एकता यमुना की पर्वतीय प्रदेश वर्तमान चकराता से भी की जा सकती है। लाखामण्डल का एक शिलालेख जो संस्कृत भाषा व ब्राह्मी लिपि में है तथा पांचवीं शताब्दी का है। इसमें जयदास के राजवंश के राजाओं के नाम हैं। यह शिलालेख कुछ खण्डित हो गए हैं लेकिन लिखा है कि छागलेश दास का पुत्र रुद्रेस दास हुआ। रुद्रेस दास हिमाचल के इतिहास के अनुसार आटूम्बगर गण का शासक भी रहा है।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने पर्वतीय राज्य 345 ई०पू० में अपने अधीन कर लिए थे। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में इन राज्यों के कबीलों को आयुधजीवी शस्त्रोपजीवी लिखा है। सम्राट अशोक ने कालसी में भी अपना शिलालेख लिखा था। अशोक के समय भिक्षु कस्पगोता द्वारा मौर्य के समय ब्राह्मी व खरोष्ठी भाषा का खूब प्रचार-प्रसार हुआ था। अशोक के बाद पर्वतीय राज्यों में यूनान के राजाओं ने राज्य किया था (250 से 150 ई०पू०)। यूनान के राजाओं में राजा एण्टी ओकस का नाम कालसी के शिलालेख में भी है। जिससे यह विदित होता है कि यूनान के राजाओं का राज्य जौनसार बावर यामून देश में रहा है। यूनान के राजाओं के बाद जनराज्य में यौधेय अग्र, विगत आदि गणतंत्रीय राज्य थे। ईसा से 200 वर्ष पूर्व कुणिन्द जनराज्य बहुत शक्तिशाली था। इसका विस्तार शिमला, सिरमौर, गढ़वाल, कुमाऊँ, सहारनपुर, अम्बाला तक था।

गणराज्य यौधेयों की ताम्र मुद्राएं जौनसार बावर में भी मिलती हैं। यौधेय राज्य ईसा की तीसरी व चौथी सदी के आसपास माना गया है। इनका राज्य विद्वानों के अनुसार हिमाचल के कांगड़ा, सिरमौर, सहारनपुर, जौनसार, बावर, गढ़वाल तक फैला था। काला डांडा गढ़वाल में व उपरोक्त स्थानों में इन राजाओं की यौधेय मुद्राएं मिलती हैं। इनकी मुद्राओं में ब्राह्मी में औधेय गणस्य की जय व इनकी मुद्राओं में कार्तिकेय का चित्रण है। इन्हें कौटिल्य ने आयुधजीवी क्षत्रिय लिखा है। विद्वान यह भी मानते हैं कि इन्होंने कुषाणों को हराकर राज्य प्राप्त किया था। खासकर

कुषाणों से यह राज्य कुणिन्दों ने जीता था। बाद में शायद कुणिन्द सामंत यौधेयों के अधीन राज्य करते थे। विद्वानों का मत है कि कालान्तर में औटम्बर, कुणिन्द, यौधेयगण में सम्मिलित हो गए थे। वैसे कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि जौनसार व जौनपुर कुणिन्द जनपद के जन से हैं।

नोट: जौनसार बावर (यामून देश) में कालसी-लाखामण्डल ऐसे स्थान हैं जहाँ पौराणिक काल से भी पहले का राजनीतिक इतिहास मिलता है। कालसी के बारे में कई विद्वान जिन्होंने काफी खोज कर लिखा है। जैसे सर्वश्री यशवन्त सिंह कठोच, राहुल सांकृत्यायन, राजेन्द्र राणा नयन, हरिकृष्ण रतूड़ी, रणजोर सिंह, इन लेखकों ने कालसी को पौराणिक कलकूट खलतिका खसदेश, वनराष्ट्र, यामून प्रदेश में कुणिन्दों की राजधानी राहुल ने खलतिका लिखा है। यहाँ राजा रिसालू की टीकरी का उल्लेख जी०आर०सी० विलियम ने अपनी पुस्तक में किया है। यह चार नदियों के पास है जिसमें टौंस व यमुना मुख्य हैं। कालसी में कभी आज का विकासनगर क्षेत्र भी था। कुणिन्दों का राज्य पौराणिक काल में था जिसका वर्णन महाभारत में भी है व अश्वमेधकर्ता शीलवर्मन का युगशैल राज्य कालसी में था। उस समय यमुना का बहाव विकासनगर के ऊपरी हिस्से में था। इस बीच की सारी भूमि कालसी युगशैल कलकूट नामों से जानी जाती थी। यमुना के बहाव ने वह नगर व संस्कृति समाप्त करके भूगोल ही बदल दिया था। कालसी प्राचीन काल में इसलिए भी महत्वपूर्ण थी कि यह भारत के केन्द्रीय स्थल दिल्ली से यमुना जल मार्ग से सीधी जुड़ी थी। यहाँ से यमुनोत्री धाम, टौंस से हनोल, हरकी दूण, हाट कोटी, किन्नौर, कश्मीर तक के मार्ग जाते थे। यह सन् 1219 ई० में सिरमौर की राजधानी बनी, जो 29 राजाओं की केन्द्रीय राजधानी रही।

जौनसार बावर का लाखामण्डल भी एक सिद्ध स्थान व केन्द्रीय स्थान है। महाभारत काल में इसका नाम वर्णावत था। ईश्वरा के लेख व चीनी यात्री ह्वेनसांग की यात्रा में यह स्थान सिंहपुर के रूप में वर्णित है तथा यहाँ छागलेश केतु के शिलालेख से उसकी राजधानी होने का आभास होता है। यहाँ एक दुर्ग के अवशेष हैं जिसे गढ़का कहा जाता है। अपराधी को जहाँ शूली पर चढ़ाया जाता था, वह स्थान आज भी है। यहाँ पर रिखनाड़ गाड (ऋषिनाला), गुठाड़ गाड (गोमती), वरनी गाड (वरुणी) तथा गंगाणी पाणी का संगम है। लाखामण्डल के संग्रहालय में पाँच शिलालेख हैं जिसमें केवल ब्राह्मी लिपि के दो शिलालेख पढ़े जा सकते हैं तथा एक शंख लिपि व एक नागरी लिपि व एक गुप्तकालीन है जो (प्रकाशित) नहीं हैं।

जौनसार बावर का तीसरा स्थान टौंस नदी के किनारे महाभारत में वर्णित व जौनसार बावर के आदि कुल देवता महासू का नगर हनोल है। यहाँ महासू मंदिर के अतिरिक्त विष्णु मंदिर का हिस्सा आज भी महासू मंदिर के साथ है। यहाँ एक म्यूजियम भी है जिसमें कई मूर्तियाँ व पुरावशेष हैं। हनोल का पुराना नाम चक्रानगरी है जो महाभारत में वर्णित है। यहाँ के बारे में पुणे के भण्डारकर शोध संस्थान में हस्तलिखित लिपि में एक अभिलेख है जिसमें सात-चक्रानगर राजाओं का वर्णन है जो यहाँ के बारे में हो सकता है। निःसंदेह जौनसार बावर अति प्राचीन है। यदि उपरोक्त स्थानों पर शोध किया जाए तथा साथ में जोड़ते हुए हिमाचल के हाटकोटी सिद्धपीठ, चुड़ेश्वर, रेणुका खासतौर से गिरी नदी पर बसे सिरमौरी ताल नगर पर शोध किया जाए और जो भी शिलालेख हैं, उन्हें प्रकाशित किया जाए तो जालन्धर खण्ड सुधना आदि कई पौराणिक, ऐतिहासिक व धार्मिक स्थानों के बारे में सही जानकारी मिल सकती है। साथ ही इन क्षेत्रों में गढ़वाल का पंवार वंश, सिरमौर का यदुवंश, जुब्बल के राजाओं के दस्तावेजों को भी शामिल करके कुछ तथ्य प्राप्त किये जा सकते हैं।

महाभारत के बाद का समय कलयुग के आरम्भ का माना गया है। विद्वानों का मत है कि कलयुग का आरम्भ पंचांग के अनुसार 5000 वर्ष पहले का है। आधुनिक पुरातत्ववेत्ता महाभारत काल को ईसा से 1500-3000 वर्ष पहले का मानते हैं। पौराणिक काल में पूरे हिमालय क्षेत्र में किरात, कुणिद, राक्षस, दानव, तंगण, पुलिंद, कोहल, डोम आदि जातियाँ निवास करती थी तथा इनमें तीन बड़ी शक्तियाँ केदारखण्ड में शासन करती थी। प्रथम बाणासुर जिनकी राजधानी शोणितपुर में थी। दूसरा सुबाहु जिसकी राजधानी श्रीपुर (श्रीनगर) में थी, वह पुणिंद, किरात, तंगण आदि जातियों का राजा था। तीसरी शक्ति थी राजा विराट जिनकी राजधानी जौनसार के विराटगढ़ पर थी जो चकराता मसूरी मार्ग पर स्थित है। इसके महल के खण्डहर, चारों ओर कटी खाइयाँ, सुरंगें आज भी विद्यमान हैं।

राजा विराट के यहाँ पांडवों ने अपना गुप्तवास पूरा किया था। उसके सेनापति का नाम कीचक था जो दानव जाति का महा बलवान था जिसकी जागीर में भौसान का क्षेत्र था उसका वध भीम ने किया था। राजा विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन पुत्र अभिमन्यु के साथ हुआ था। इनके राज्य की सीमा पूरी तरह ज्ञात नहीं हो सकी है। राजा विराट शायद नागवंशी राजा या नागपूजक था, क्योंकि नागसत (नागथात) इनकी राजधानी के साथ लगा क्षेत्र है। राजधानी के साथ ही झुलका डांडा है। कहते हैं कि इस रमणीक क्षेत्र में राजा की रानियाँ झूले झूला करती थी। बावर क्षेत्र में बकासुर व कीरमीर दानव का राज्य था। हनोल का पुराना नाम चक्रा नगर था तथा मैन्ध्रथ का पुराना नाम सुनपत नगर था। के वनपर्व में है। बकासुर का राज्य शायद उत्तरकाशी के राडी डांडा के बकासुर व हिडिम्ब को भीमसेन ने मारा था, इसका उल्लेख महाभारत अरले क्षेत्र तक था। कीरमीर राज्य संज्ञा थी क्योंकि कीरमीर दानव का मारा जाना कलयुग के महाशूरों (महासू देवताओं) द्वारा बताया जाता है। महासूओं के आने से पहले हनोल में विश्वनाथ (महादेव) मंदिर था। शिव दानव, राक्षस, नाग आदि जातियों के आराध्य भी हैं।

कीरमीर दानव की राजधानी शायद मैन्ध्रथ (सुनपत नगर) व बकासुर की राजधानी बगासू में थी। बगासू को बताते हैं कि इसका नाम बकासुर के नाम पर ही पड़ा मय दानव की राजधानी सीड़ी रही है। मय दानव के घर का रास्ता रोन्द एक तो मोरावा व दूसरा मानथात के ऊपर बताया जाता है। ऐसा लगता है कि इस क्षेत्र में दानव जाति व राक्षस जो अनार्य थे, काफी प्रभावी रहे हैं। राक्षस शब्द (रक्षक) से बना है। इसे पार्टी या समूह कहा जा सकता है। दैत्य, राक्षस, दानव आदि यह सब एक ही जाति वर्ग के अनार्य कबीले थे। इन जनजातियों (यहाँ के मूल निवासियों) ने आक्रमणकारियों से बचने के लिए जो संघ बनाया उसका नाम पूरे देश में रक्षक रखा गया।

संघ अपनी रक्षा हेतु संगठित हुआ था जो आर्यों द्वारा राक्षस कहे जाने लगे थे। यह संगठन ऐसा मान लो जैसा हिन्दुओं में रक्षा के लिए सिख समाज गुरुओं ने बनाया था। इस समाज में कौन-कौन था, यह कहना मुश्किल है।

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है कि तीन महाशक्तियों में एक राजा विराट भी था। जो जौनसार के अतिरिक्त काफी बड़े राज्य पर राज करता था। इनके राज्य की सीमा अमलावा नदी थी। क्योंकि कालसी या कालिन्द नगर कुणिन्द की राजधानी थी जिनका संयुक्त राज्य कुमाऊँ मानसखण्ड के कुछ हिस्से केदारखण्ड व जालंधर खण्ड में था जिनके राजवंश सामूहिक रूप से कुणिन्द कहलाते थे। ऐसा विद्वानों का मत है तथा राजधानी यमुना (कालिंदी) के किनारे होने से ये कुणिन्द कहलाते थे। वैसे तो संसार सदैव परिवर्तनशील रहा है। जो स्थान कभी सुन्दर नगर थे वहाँ आज मिट्टी के ढेर व जंगल हैं। जिन बस्तियों के करीब कभी नदियाँ थी, वह बूंद-बूंद पानी को तरसती है। जहाँ कभी घने जंगल हुआ करते थे वहाँ आज महानगर हैं। इसी

प्रकार जाति व समाज में भी परिवर्तन होते रहते हैं। अर्थात् जो समाज कभी उन्नति के शिखर पर थे, वह आज दासता के बन्धनों में जकड़े हैं।

यह अभी तक किसी इतिहास से ज्ञात नहीं हुआ है कि सृष्टि के आदिकाल में कौन सी जाति कहाँ रहती थी, कहाँ पैदा हुई थी व उस समय किस जाति संज्ञा से पुकारी जाती रही होगी। कोई जाति हमेशा एक स्थान पर नहीं रहती है। कालान्तर में कोई भी नहीं जानता है कि पूर्वज कहाँ से आए। वस्तुतः आदमी जहाँ बस जाते हैं, पीढ़ियाँ बाद में वहीं की होकर रहती हैं। जौनसार बाबर का अपना कोई लिखित इतिहास नहीं है। लेखक जितना जान पाया वह लिख दिया है।

पौराणिक दृष्टि से जौनसार बाबर केदारखण्ड का एक हिस्सा है। इसलिए यहाँ भी वही जातियाँ हैं जो केदारखण्ड के अन्य हिस्सों में हैं। जौनसार बाबर केदारखण्ड का आखिरी सीमान्त क्षेत्र है। टौंस नदी के पार जालंधर खण्ड है जो जौनसार से लगता क्षेत्र है। इसलिए आपस में रीति-रिवाज मिलते हैं व आदिम जातियाँ जो यहाँ हैं, वह वहाँ भी पायी जाती हैं। यहाँ पर वैदिक काल व पौराणिक काल में किरात, कोल, राक्षस, दानव, कोहल, कोलिद (कुण्डि), असुर आदि रहते थे। भारत में आर्यों का आगमन 5000 वर्ष पहले माना गया है, लेकिन जौनसार व अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में आर्यों का आगमन शंकराचार्य के समय में 9वीं शताब्दी में माना जा सकता है।

महाभारत में खस, कुलिन्द, किरात, तंगण, किन्नर, यक्ष, नाग आदि जातियों का वर्णन है। वनवास के दौरान युधिष्ठिर भीम से कहते हैं कि— हिडिम्बच महावीर्य किरमीर च राक्षसं। त्वया हत्वा महाबाहो वनं निष्कंटक कृतम् ।।

महाभारत में सुबाहु व बाणासुर का होना भी लिखा है। नागवंश के राजाओं का शासन भी केदारखण्ड में ईसा की तीसरी शताब्दी तक पाया जाता है। नागराजाओं ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। अशोक के शासनकाल में बौद्ध धर्म को राजधर्म बना लिया था। नागराजाओं के यहाँ छोटे-छोटे राज्य थे। उनके राज्यकाल में समान न्याय, बन्धुत्व, शिक्षा तथा भयमुक्त समाज की व्यवस्था थी। नाग अधिकतर शाकाहारी रहे होंगे, क्योंकि आज भी नाग देवताओं की पूजा दूध से की जाती है।

नोट: जालन्धर का जिक्र ईश्वरा के लाखामण्डल शिलालेख में भी आया है। उनके पति को जालन्धर का राजा होना बताया है। लेखक का मानना है जालन्धर नाम की राजधानी ईस्वी 6 से पूर्व सिरमौरी ताल रही हो। जलन्धर—जल अन्दर—अर्थात् पानी के अन्दर। सिरमौरी ताल की राजधानी भी जल के बीच ही थी। महाभारत काल व उसके बाद भी यही जगह जलन्धर रही होगी। बाद में रानी ईश्वरा के समय में भी शिलालेख में उसका विवाह जालन्धर के राजपुत्र से होना लिखा है। इस क्षेत्र का प्राचीन नाम कांगड़ा तक जालंधरायः रहा है। सिरमौर रियासत का नाम बुलंद के पुत्र सिरमौर के नाम से जालन्धर गाँव व खण्ड को बदल कर सिरमौर रख दिया था जो आज तक कहा जाता है। चूंकि पुराने शिलालेखों में कहीं भी सम्वत् नहीं है इसलिए समय की सही जानकारी नहीं प्राप्त की जा सकती है। अनुमान मात्र ही लगाया जा सकता है।

श्री हरिकृष्ण रतूड़ी गढ़वाल के इतिहास में लिखते हैं कि गढ़वाल में पंवार (शाह) राजवंश का धार राजस्थान से आना करीब नौवीं सदी में है और शंकराचार्य का उत्तराखण्ड में आना भी नौवीं शताब्दी का ही माना जाता है। जैसे पुराणों में सिद्ध, गंधर्व, यक्ष, किन्नर आदि की चर्चा की जाती है। सुर—असुर व दानव की चर्चा भी है और यही सब इस हिमालय क्षेत्र की प्राचीन जातियाँ व निवासी हैं।

कुण्डि राजा शीलवर्मन—शिवभवानी

ये दोनों चक्रवर्ती राजा थे। इनका शासनकाल ईसा 300 वर्ष के आसपास माना जाता है। ये कुण्डि संघ के शासक थे। इन्होंने यमुना के पास अश्वमेध यज्ञ किये थे। शीलवर्मन ने राजावाला (जगतग्राम) तथा शिव भवानी ने अम्बाड़ी में अश्वमेध यज्ञ करवाया था। शीलवर्मन ने चार अश्वमेध यज्ञ करवाए थे। अश्वमेध वेदिका गरुडाकार हैं। एक ही स्थान पर दो स्थल एक ही अहाते में पश्चिम व दक्षिण में बने हैं। तीसरा स्थल 100 मीटर के अन्दर दक्षिणपूर्व में है। लेख सहित समग्र ईंटें उपलब्ध नहीं हैं। संग्रहालय को भेजी गई हैं। ईंटों में अंकित लेख निम्न है। लिपि ब्राह्मी, भाषा संस्कृत तिथि तीसरी शताब्दी विक्रमी—सिधम युगेश्वर स्यास्वमेधे युगशैल महिपते। 1. इष्टका पार्श्व गणस्य नृपते शीलवर्मणः ।। अनुवाद रु पार्श्वगण्य के प्रधान युगशैल देश के महिपति युगेश्वर शीलवर्मन के अश्वमेध (यज्ञमण्डप) की ईंट—2. नृपते वार्श्वगणस्य पोण षष्ठस्य धीमतः। चतुर्थस्याश्वमेधस्य चित्योऽयं शीलवर्मणः ।। भावानुवाद रु यह उस धीमान राजा शीलवर्मन के चौथे अश्वमेध का चौथ्य है। जो वार्श्वगण्य गोत्र के पोण की छठी पीढ़ी में उत्पन्न हुआ था। उपरोक्त इष्टिकाओं के लेखों का अध्ययन 1953 में श्री टी०एन० रामाचन्द्रन व यज्ञ दत्त शर्मा ने किया था।

जौनसार क्षेत्र का आर्थिक परिचय।

जौनसार—बाबर क्षेत्र एक आदिवासी इलाका है, जहाँ की आर्थिक गतिविधियाँ मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन, बागवानी, और पर्यटन पर आधारित हैं। क्षेत्र की 95 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। यहाँ की अर्थव्यवस्था का आधार खेती—बाड़ी और पारंपरिक खेती की पद्धतियों में निहित है। कृषि इस क्षेत्र की प्रमुख आर्थिक गतिविधि है। जौनसार—बाबर में कृषि को दो प्रकार की भूमि में विभाजित किया गया है: सिंचित भूमि, जिसे 'ग्यारकी' कहा जाता है, और असिंचित भूमि, जिसे 'उखड़ी डोखरे' या खेत कहा जाता है। यहाँ की खेती पहाड़ी क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप होती है। गेहूँ, धान, मक्का, मंडुआ, और जौ जैसी फसलें यहां उगाई जाती हैं। इसके अलावा, नकदी फसलों में आलू, अदरक, मटर, और टमाटर जैसी फसलें उगाई जाती हैं। ये फसलें न केवल स्थानीय बाजार में खपत होती हैं, बल्कि इन्हें अन्य क्षेत्रों में भी निर्यात किया जाता है, जिससे किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। पशुपालन: कृषि के साथ-साथ पशुपालन इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जौनसार—बाबर के लोग गाय, भैंस, बकरी, और भेड़ों का पालन करते हैं। इससे उन्हें दूध, खाद, ऊन, और कृषि कार्यों के लिए बैल जैसी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। पशुपालन और कृषि आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं, जहाँ पशुओं से प्राप्त खाद का उपयोग खेतों में किया जाता है। बागवानी: जौनसार—बाबर का पहाड़ी क्षेत्र बागवानी के लिए भी अनुकूल है। यहाँ के लोग सेब, अखरोट, आड़ू, और कीवी जैसी फसलों का उत्पादन करते हैं। यहाँ की जलवायु और मिट्टी इन फलों के उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है। बागवानी क्षेत्र के लोगों के लिए एक अतिरिक्त आय का स्रोत प्रदान करती है और यह एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक गतिविधि के रूप में उभर रही है। पर्यटन: जौनसार—बाबर प्राकृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक रूप से एक आकर्षक स्थल है, लेकिन आदिवासी क्षेत्र होने के कारण यहाँ का पर्यटन अभी तक पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाया है। क्षेत्र में सम्राट अशोक के शिलालेख, पुरातात्विक स्थलों, देववन की व्यास गुफा, और महासू देवता का मंदिर जैसे ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों के कारण पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। अगर इसे ठीक तरह से विकसित किया जाए तो यह स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न कर सकता है।

जौनसार क्षेत्र का सामाजिक परिचय

जौनसार बावर जनजाति स्तरीकृत है ये प्रमुख रूप से तीन सामाजिक स्तरों में विभक्त हैं जो जन्म पर आधारित होने के कारण स्थिर हैं इन तीनों पर संक्षिप्त टिप्पणी निम्न हैं उच्च स्तर सर्वप्रथम ब्राह्मणों एवं राजपूतों का स्तर है जो कि परम्परागत भूमि के स्वामी के साथ-साथ कृषक एवं ऋण प्रदानकर्ता भी है। सामाजिक स्तर से ब्राह्मणों एवं राजपूतों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। सवर्ण वर्ग के प्रतिनिधित्व के कारण ये लोग आपस में विवाह सम्बन्ध भी स्थापित करते हैं। इनकी जनसंख्या अन्य दो स्तरों की अपेक्षाकृत अधिक है।

मध्य स्तर सामाजिक स्तर के मध्य में दस्तकारों का प्रतिनिधित्व है। इसमें सुनार (स्वर्णकार), लोहार, काष्ठकार, नाथ (जागड़ा) एवं बाजगी का स्थान आता है। ये सभी आपस में ऊँच-नीच का भेदभाव रखते हैं अधिकांश लोग भूमिहीन हैं। ये सवर्णों का दासत्व स्वीकार किये हुए हैं इनके निवास स्थान सवर्णों के निवास स्थान से सटे हुए या अत्यधिक निकट होते हैं, ताकि आवश्यकता पड़ने पर भीघ्रता से बुलाया जा सके। इसमें काफी लोगों के निवास स्थान सवर्णों द्वारा प्रदत्त भूमि पर ही बने होते हैं बाजगी के परिवार जौनसार ग्रामों के प्रत्येक ग्राम में निवास करते हैं। चूँकि ये विवाह एवं उत्सव में बाजा बजाने का कार्य करते हैं, इस कारण इन्हें 'बाजगी' कहा गया है। निम्न स्तर सामाजिक स्तरीकरण में सबसे निम्न स्तर का प्रतिनिधित्व डोम, मोची या चमार, करते हैं इन्हें 'कोल्टा' कहा गया है। सबसे निम्न होम हैं। कोल्टा अछूत, परम्परागत भूमिहीन श्रमिक, सवर्ण वर्ग अर्थात् प्रथम सामाजिक श्रेणी की दासता स्वीकार करने वाले वर्ग में आते हैं। कोल्टा जौनसार प्रत्येक गाँवों में निवास करते हैं एक प्रकार से इनका पाशेण समाज के उच्च स्तर के लोगों के द्वारा होता है। कतिपय परिवार वाले वर्तमान समय में भाहरों में जीवन यापन करने लगे हैं सामान्य गाँव सीमा के बाहर कोल्टा अपने निवास स्थानों का निर्माण करते हैं। अध्ययनों से कोल्टाओं में भी तीन स्तर मिलते हैं— खण्डित मुण्डित— यह वर्ग सवर्णों (ब्राह्मण राजपूत) के परिवार से सम्बद्ध होता है। इसका सम्बन्ध एक पी आवास जौनसारी के परम्परागत आवास काष्ठ, पत्थर, स्लेट के द्वारा निर्मित किये जाते हैं। मकान निर्माण में देवदार की लकड़ी या बल्ली का प्रयोग किया जाता है। आवास स्थान के दीवार पत्थर के आयताकार व दुमजिले होते हैं, दीवार व खिड़की पर सुन्दर नक्काशी बनी होती है। आवास के नीचे के भाग में पट्टी व भंडार एवं ऊपर के भाग में सोने की व्यवस्था होती है। अस्थायी तौर पर कृषि कार्य को पूर्ण करने के लिए बनाये गये आवास को छानी कहते हैं। समय के बदलते परिवेश में इन लोगों ने पक्के मकानों का निर्माण करना शुरू कर दिया है। वन्य विभाग की कठोर व्यवस्था के कारण काष्ठ प्राप्ति में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, अतएव परम्परागत ढंग के मकान अब कम ही निर्मित हो रहे हैं। परिधान जौनसार बावर में गर्मी व जाड़े के परिधान अलग-अलग हैं। ये लोगे सर्दी में ऊनी पैजामा (झगाले), जोगा, साफा एवं ऊनी जूते पहनते हैं गर्मी में सट्टी कुर्ता, झगाले, डिगवा (टोपी) एवं बरसात में पत्तों की बरसाती पहनते हैं। स्त्रियाँ सर्दी में ऊनी कुर्ता, घाघरा ऊनी, घाटू एवं ग्रीष्म में घाघरा (सूती), कुर्ती, कमीज जिसे 'झगा' कहते हैं पहनती हैं। सामाजिक संगठन जौनसार बावर का क्षेत्र 39 खतों में बंटा है। खतों के मुखिया को 'खत स्थाना' और ग्राम के मुखिया को 'ग्राम स्थाना' कहते हैं। उत्तर प्रदेश के पंचायतराज अधिनियम 1948 के अनुसार ग्राम सभाओं एवं पंचायती अदालतों का गठन किया गया, तथापि जौनसारियों के मध्य इनकी परम्परागत 'खुमड़ी' कार्यरत है। यह 'खुमड़ी' इनकी जातीय पंचायत है, इसमें छोटे-छोटे झगड़े व क्षतिपूर्ति के दावों का निर्णय होता है। इसमें स्त्रियाँ भाग नहीं ले सकती और न ही पंचायत की आम सभा में हिस्सा ले सकती हैं। परम्परागत स्थाना

को लागे वर्तमान समय में कम महत्व देने लगे हैं। आर्थिक संगठन जौनसारी अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि पर आधारित है। स्त्री-पुरुष दोनों ही कृषि कार्य में बराबर का श्रम करते हैं। इनकी कृषि पट्टी पर आधारित होती है। कृषि फसल में गेहूँ, धान, मक्का, अदरक, चौलाई एवं हल्दी का उत्पादन करते हैं, ये लागे जो अनाज का उत्पादन करते हैं, उसका अधिकांश भाग भंडार कर लेते हैं। जौनसारी पर्याप्त मात्रा में पशुधन रखते हैं, जिसमें भेड़, गाय, भैंस व बकरी इत्यादि हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिद्धान्त कौमदी— व्यंकटेश्वर प्रेस मुम्बई—पृष्ठ संख्या—41736
2. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास षोडश-भाग, प्रस्तावना पृष्ठ संख्या 1
3. लोक साहित्य की भूमिका डॉ० बापूराव देसाई, पृष्ठ संख्या 17
4. अशोक के शिलालेख, पृष्ठ सं० 177
5. एन्साइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्सेस जिल्द 5 पृष्ठ संख्या—288
6. लोक साहित्य का अध्ययन, जनपद त्रैमासिक अंक 1—पृष्ठ संख्या 6639
7. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ० बापूराव देसाई, पृष्ठ संख्या 1840
8. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य प्रस्तावना डॉ० शंकर दयाल शर्मा
9. हिन्दी नाटक उद्भव और विकास डॉ० दशरथ ओझा (प्रथम संस्करण) पृ० 4216 हिन्दी नाटक उद्भव व और विकास डॉ० दशरथ ओझा (प्रथम संस्करण) १० 4349
10. जनपद पत्रिका, अक्टूबर 1952 / ग्राम साहित्य राम नरेश त्रिपाठी
11. हिन्दी नाटक उद्भव और विकास डॉ० दशरथ ओझा (प्रथम संस्करण) पृ० 421
12. डॉ० सत्येन्द्र ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन पृ० 9—1051
13. लोक साहित्य विज्ञान के प्लोक गाथा के मूल तत्त्व विशेषता अभिप्रायः डॉ० सावित्री सरीन अध्याय से पृष्ठ 26752
14. छत्तीस गढ़ी लोक जीवन और लोक साहित्य का अध्ययन— डॉ० शुक्लन्तला वर्मा, पृष्ठ संख्या 105
15. छत्तीसगढ़ी लोक जीवन और लोक साहित्य का अध्ययन—डॉ० शुक्लन्तला वर्मा, पृष्ठ संख्या—113
16. उत्तराखण्ड का इतिहास भाग—3 शिव प्रसाद डबराल ।
17. कश्मीरी भाषा और साहित्य डॉ० शिवन कृष्ण रैणा (1972) सन्मार्ग प्रकाशन 16 यू०बी०बैंगलोर रोड—7
18. कुमाँऊनी लोककथाएँ रमेश मटियानी शैलेश
19. लोक—साहित्य — डॉ० सत्येन्द्र, शिव लाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, पुस्तक प्रकाशन आगरा—03 ।
20. लोक साहित्य का सामाजिक साँस्कृतिक अध्ययन—डॉ० श्रीराम शर्मा (2000) निर्मल पब्लिकेशन कबीर नगर, दिल्ली ।
21. लोक साहित्य : सिद्धान्त और प्रयोग डॉ० श्रीराम शर्मा (1973) विनोद पुस्तक — मन्दिर रांगेय राघव मार्ग आगरा —2
22. हिमालय परिचय — गढ़वाल राहुल सांकृत्यायन (1957) लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद ।